A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ग़ज़ल गायकी में तबले की भूमिका

Vishakha Bhardwaj[1], Rahul Bhardwaj[2], Dr. Amandeep Singh Makkar[3]

1 Ph.D. Scholar, School of Liberal & Creative Arts (Theatre & Music), Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab, India
2 M.A Music (student), Govt. Maulana Azaad Memorial Post Graduate College, Jammu, Jammu and Kashmir, India
3 Asst. professor, School of Liberal & Creative Arts (Theatre & Music), Lovely Professional University, Jalandhar, Punjab, India

सार

संगीत भावाभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। संगीत को स्वर-लय-ताल में पिरोकर उसकी अदायगी की अनुभूति भावों के द्वारा ही व्यक्त की जाती है। संगीत सभी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। संगीतको मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है- शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत। सुगम संगीत भी उपशास्त्रीय संगीत का ही एक भाग है जिसे सरल संगीत भी कहा जाता है। सुगम संगीत के अन्तगर्त गीत,गजल,भजन,कव्वाली और लोकगीत इत्यादि गायन शैलियां आती है। जिसमें सर्वाधिक प्रभावित करने वाली शैली गजल गायन शैली है। ग़ज़ल का जन्म ईरान में हुआ जहाँ इसे फारसी भाषा में लिखा जाता था। गजल शब्द की व्युत्पत्ति अरबी भाषा के गजाला शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है मृग या हिरन। ग़ज़ल लिखने की सर्व प्रथम शुरुआत अरबी साहित्य से हुई कालान्तर में यह फारसी उर्दू व हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। गजल का मिजाज सुन्दरता, वेदना, विरहा, प्रेम आदि भावों से परिपूर्ण होता है। हिन्दी के प्रथम गजलकार प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो को माना जाता है। गजल गायन शैली श्रृंगार रस प्रधान गायकी है जो कम शब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करने में सक्षम है। समस्त संगीत एवं संगीत शैलियों की सांगीतिक प्रस्तुति में ताल का एक महत्वपूर्ण स्थान है।संगीत में तालबद्ध एवं लयबद्ध होना नितान्त आवश्यक है। ताल को संगीत का प्राण माना गया है। ताल वायों में तबला एक मात्र ऐसा अवनद्रय वाद्य है. जिसे सगत एवं एकल वादन दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है। संगत का अर्थ मात्र किसी के साथ चलना या जाना ही नहीं हैवरन् साथ मिल कर जुड़कर समन्वय बनाकर चलना या जाना होता है। तबला संगत का प्रमुख वाद्य है। वर्तमान समय में संगीत की समस्त विद्याओं को प्रभावशाली मनमोहक व लयबद्ध बनाने के लिए तबला संगति का प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण है। गजलगायन शैली में तबला संगति का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्दः- *ग़ज़ल, तबला, ताल*

परिचयः

तबला भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण ताल वाद्य है, जिसका उपयोग अक्सर ग़ज़ल गायन सहित विभिन्न शैलियों में किया जाता है। ग़ज़ल में, जो काव्यात्मक अभिव्यक्ति का एक रूप है जो उर्दू कविता को संगीत के साथ मिश्रित करता है, तबला एक सहायक भूमिका निभाता है, लयबद्ध संगत प्रदान करता है जो ग़ज़ल की मधुर और गीतात्मक सामग्री को पूरक करता है।भारत में ग़ज़ल की शुरुआत 13वीं शताब्दी में मानी जाती है, जब अमीर खुसरो ने इसकी नींव रखी। हालांकि, इसका उर्दू रूप 16वीं शताब्दी में मोहम्मद कुली कुतुब शाह के साथ उभरा। 17वीं शताब्दी में वली दक्कनी ने इसे उत्तर भारत में लोकप्रिय बनाया। 18वीं और 19वीं शताब्दी में मीर तकी मीर और मिर्ज़ा ग़ालिब ने ग़ज़ल को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। ग़ालिब के गहरे, दार्शनिक और बहुस्तरीय शेरों ने ग़ज़ल को केवल प्रेम और दर्द तक सीमित न रखकर उसमें जीवन और समाज के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया।इस दौरान, ग़ज़ल की संरचना, विषय और भाषा में काफी परिवर्तन हुए। उर्दू ग़ज़ल ने सूफीवाद, प्रेम, दर्शन, राजनीति और समाज के मुद्दों को अपने में समाहित किया, और स्वतंत्रता संग्राम के समय में यह एक क्रांतिकारी स्वरूप भी ले ली। फैज़ अहमद फैज़ जैसे शायरों ने ग़ज़ल को स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक न्याय के लिए एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।ग़ज़ल का प्रभाव न केवल भारत और पाकिस्तान में बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी देखा गया, जैसे तुर्की, जर्मनी, और यहाँ तक कि अमेरिका और कनाडा में भी। पश्चिमी कवियों ने ग़ज़ल के फारसी और उर्दू रूपों से प्रेरणा लेकर अपनी भाषा में ग़ज़ल लिखना शुरू किया, जिससे यह एक वैश्विक साहित्यिक रूप बन गई।ग़ज़ल का यह इतिहास हमें बताता है कि यह एक बहुआयामी काव्य रूप है, जो समय के साथ विकसित हुआ और विभिन्न संस्कृतियों व भाषाओं में अपनी पहचान बनाई।

तबले की उत्पत्ति

तबला वाद्य आज भी बहुत प्रचलित, लोकप्रिय और सब से पुराना अवनद्ध वाद्य है। यह साज पहले गायन और वाद्य संगीत के लिए साथसंगत करने के मुख्य उद्देश्य से बनाया गया था, लेकिन आज यह दोनों विधाओं में साथसंगत और स्वतंत्र वादन में अपनी भूमिका बखूबी निभा रहा है। तबला वाद्य की उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ कहना असंभव है, लेकिन तबले के जनक या निर्माता तथा इस वाद्य के निर्माण के काल के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी हासिल नहीं हुई है। तबला वाद्य शायद पखावज या मृदंग से बना था। पखावज के दो भाग करने के बाद कई मनोरंजक

कहानियाँ सुनाई जाती हैं, जैसे "टुटा तब भी बोला" का अपभ्रंश "तबला", लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। पूर्ण पखावज काटने से किस प्रकार की आवाज निकली होगी? अगर पखावज की कुछ बद्धियाँ कट गईं, तो सही आवाज नहीं निकलती। पखावज को काटकर खड़ा करने पर उसका नीचे का हिस्सा खुला रहा होगा, जैसा कि पाश्चात्य वाद्यों में होता है। तबला अल्लाउद्दीन खिलजी (1290–1320) द्वारा बनाया गया था, लेकिन १८वीं शताब्दी में १५०० साल बाद वाद्य सिद्धार खाँ ने इसका प्रचार क्यों किया? यह पिछले वर्ष किस परिस्थिति में था? आज भी ऐसे कई प्रश्न उठते हैं। 1719 में दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले (1719–1748) के दरबार में कई संगीतकार थे। उस समय ख्याल गायन, ठुमरी, दादरा, कव्वाली और वीणा के स्थान पर सितार जैसी तंतुवाद्य का प्रचार और प्रसार हुआ। ख्याल गायन, ठुमरी आदि शैलियों के साथ-साथ सितार के साथ-साथ पखावज की गंभीर ध्वनि अनुकूल नहीं थी।

ग़ज़ल गायन:

ग़ज़ल गायकी एक सुरीला संगीत का रूप है, जो शायरी और संगीत का संगम है। यह एक ऐसा संगीत शैली है जिसमें शायर के शब्दों को सुर और ताल के साथ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उसकी हर भावनात्मक गहराई और अर्थ दर्शकों के दिल तक पहुँच सके। ग़ज़ल की शुरुआत प्राचीन उर्दू और फ़ारसी साहित्य से हुई थी, लेकिन समय के साथ यह भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में भी बेहद लोकप्रिय हो गई। उर्दू भाषा में ग़ज़ल का विकास और उसका गायकी में रूपांतरण सबसे अधिक हुआ, लेकिन हिंदी, पंजाबी और अन्य भाषाओं में भी यह लोकप्रिय है। गजल गायन भारतीय उपमहाद्वीप में बहुत लोकप्रिय है। ग़ज़ल अक्सर प्रेम, विछोह, दुःख और जीवन की गहरी भावनाओं को व्यक्त करती है। गायकी में शायरी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि यह एक माध्यम है जिससे गायक अपनी भावनाओं को सुंदर ढंग से व्यक्त करता है। महान गजल गायकों में ग़ुलाम अली, मेहदी हसन और जगजीत सिंह शामिल हैं, जिन्होंने इस विधा को नई उंचाईयों तक पहुंचाया। यह संगीत शैली शब्दों की मृदुता और गहराई को रागों और सुरों के साथ पेश करती है, जिससे श्रोताओं के मन में भावनाओं का सजीव चित्रण होता है।

ग़ज़ल गायकी की विशेषताएँ:

काव्यात्मक रूप: ग़ज़ल, दोहे के रूप में होती है, जिसमें हर शेर (दोहे का जोड़ा) अपने आप में एक संपूर्ण विचार होता है। ग़ज़ल के शेर स्वतंत्र रूप से भी एक अर्थ रखते हैं और पूरी ग़ज़ल के हिस्से के रूप में भी एक प्रवाह बनाते हैं।

रदीफ़ और काफ़िया: ग़ज़ल के हर शेर में एक विशिष्ट संरचना होती है, जिसे रदीफ़ (हर शेर का अंतिम समान शब्द या वाक्यांश) और काफ़िया (अंतिम शब्दों की तुक) के अनुसार गाया जाता है। यह ग़ज़ल को लयात्मकता और स्थायित्व प्रदान करता है।

संगीत और राग का प्रयोग: ग़ज़ल गायकी में अक्सर शास्त्रीय और उपशास्त्रीय रागों का प्रयोग होता है, जैसे कि यमन, भैरवी, कल्याण, आदि। गायक अपनी गायकी को इन रागों के माध्यम से एक निश्चित मूड और भावनात्मक रंग देता है।

ताल का संतुलन: ग़ज़ल गायकी में ताल की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। इसे बहुत ही मधुर और मृदु तालों जैसे कहरवा, दादरा, आदि में गाया जाता है, जिससे गायक के शब्द और सुर दर्शकों के दिल में गहरे उतरते हैं।

आवाज़ की मिठास और अभिव्यक्ति: ग़ज़ल गायकी में गायक की आवाज़ और उसकी अभिव्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण होती है। गायक अपनी आवाज़ के माध्यम से शेर के हर शब्द की गहराई को दर्शकों तक पहुँचाने का प्रयास करता है।

तबला और हारमोनियम की संगत: ग़ज़ल गायकी में तबला, हारमोनियम, सारंगी और गिटार जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है, जो गायकी को एक संपूर्ण संगीतात्मक रूप प्रदान करते हैं।

ग़ज़ल गायकी की परंपरा को बड़े-बड़े गायकों ने समृद्ध किया है, जैसे बेगम अख्तर, मेंहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह, तलत महमूद, और नुसरत फतेह अली खान। इन गायकों ने अपनी गायकी और शायरी के माध्यम से ग़ज़ल को जन-जन तक पहुँचाया और इसे एक विशेष पहचान दिलाई। अतः, ग़ज़ल गायकी सिर्फ एक संगीत की विधा नहीं है, बल्कि यह एक भावना, एक कला और जीवन के विभिन्न पहलुओं को शब्दों और सुरों के माध्यम से उकेरने का माध्यम है, जो श्रोताओं के दिलों में लंबे समय तक अपनी छाप छोड़ता है।

ग़ज़ल गायकी में तबले की भूमिका:

सहायक भूमिका: तबला एक स्थिर लय बनाए रखकर गायक का समर्थन करता है जो ग़ज़ल की गति को निर्देशित करता है।

भावनाओं को बढ़ाना: तबले पर बजने वाले लयबद्ध पैटर्न गीत के भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाते हैं, जिससे गायक की अभिव्यक्ति की बारीकियों पर जोर पड़ता है।

मेलोडी के साथ इंटरप्ले: अक्सर तबला और मधुर वाद्ययंत्रों के बीच एक सूक्ष्म इंटरप्ले होता है, जिससे ध्वनि की एक समृद्ध टेपेस्ट्री बनती है जो समग्र सुनने के अनुभव को बढ़ाती है।

ताल का चयन: ग़ज़ल गायकी में आमतौर पर कहरवा, रूपक, और दादरा जैसी तालों का उपयोग होता है। कहरवा ताल का ठेका 8 मात्राओं का होता है और यह सबसे अधिक प्रचलित है।

बोल की अभिव्यक्ति: तबला वादक ग़ज़ल के बोल के साथ ताल को इस प्रकार संयोजित करता है कि वह ग़ज़ल के भावों को उभार सके। वादक का उद्देश्य ग़ज़ल के हर शेर के भाव को तबले के माध्यम से व्यक्त करना होता है।

सुर और ताल का सामंजस्य: ग़ज़ल गायकी में तबला वादक को गायक के साथ सामंजस्य बनाए रखना होता है। गायक की गति और भाव के अनुसार तबला की गति और पैटर्न बदलते रहते हैं।

मुखड़ा और अंतरा के साथ ताल का खेल: ग़ज़ल के मुखड़ा और अंतरा के साथ तबला वादक विभिन्न प्रकार के पैटर्न का उपयोग करता है ताकि गायकी में विविधता और आकर्षण बना रहे।

फिल्लर्स और समाप्ति: ग़ज़ल में शेरों के बीच के विराम को भरने के लिए तबला वादक छोटे-छोटे बोल (फिल्लर्स) का उपयोग करता है। ग़ज़ल की समाप्ति पर विशेष प्रकार के बोल का उपयोग किया जाता है, जिससे ग़ज़ल की समाप्ति प्रभावशाली होती है।

ग़ज़ल गायकी में ताल के प्रतिरूप:

शास्त्रीय संगीत से भिन्न होते हैं, क्योंकि ग़ज़ल एक नज़्म आधारित गायकी शैली है जो मुख्य रूप से लय और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर केंद्रित होती है। ग़ज़ल गायकी में ताल का उपयोग बहुत सूक्ष्म और नाजुक तरीके से किया जाता है, ताकि शायराना अदायगी के साथ लय का संतुलन बना रहे|

ग़ज़ल गायकी में सामान्यतः जो तालें इस्तेमाल होती हैं, उनमें मुख्यतः ये शामिल हैं:

1.केहरवा ताल:- ग़ज़ल गायन में उपयोग की जाने वाली सबसे आम और सरल लय में से एक है। यह एक 8- मात्रा चक्र है (प्रत्येक 4 बीट के 2 खंडों में विभाजित) जो एक हल्की और बहती लय बनाता है, जो ग़ज़ल की भावनात्मक और गीतात्मक प्रकृति के लिए बिल्कुल उपयुक्त है।

ठेका (मूल प्रतिरूप):

1 2 3 4| 5 6 7 8

धा गे ना ती | ना का धी ना

X 0

2.दादरा ताल: ग़ज़ल गायन में अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली एक और लय, यह 6- मात्रा चक्र है जो संगीत को थोड़ा अधिक मधुर और नाजुक एहसास देता है।

ठेका (मूल प्रतिरूप):

1 2 3 | 4 5 6

धा धी ना | धा तिन ना

X 0

(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

3.रूपक ताल: यह एक 7- मात्रा चक्र है जिसका उपयोग ग़ज़ल में भी किया जा सकता है, जो एक अद्वितीय लयबद्ध संरचना प्रदान करता है जो प्रदर्शन में जटिलता और गहराई जोड़ता है।

ठेका (मूल प्रतिरूप):

1 2 3| 4 5 | 6 7

तिन तिन ना | धिन ना | धिन ना

0 2 3

4.दीपचंदी ताल: हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक प्रमुख ताल है। इस ताल में 14 मात्राएं होती हैं। इसे अक्सर ठुमरी, दादरा और अन्य हल्के शास्त्रीय संगीत में उपयोग किया जाता है। यह ताल 4 विभागों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक का विभाजन तीन, चार, तीन और चार मात्राओं में होता है। यह ताल विभिन्न शास्त्रीय और अर्ध-शास्त्रीय रचनाओं में सुन्दरता से प्रयोग होती है और इसकी लयबद्धता और माधुर्य संगीत को एक विशेष गरिमा प्रदान करते हैं।

ठेका (मूल प्रतिरूप):

1 2 3 |4 5 6 7 | 8 9 10 |11 12 13 14

धा धिन - | धा धा तिन - | ता तिन - | धा धा धिन –

X 2 0 3

5.झपताल: ताल झपताल में दस मात्रा होती हैं। पहला और तीसरा भाग 2-2 मात्राओं के होते हैं, जबकि दूसरा और चौथा भाग 3-3 मात्राओं के होते हैं। पहली, तीसरी और आठवीं मात्रा में ताली है, छठी खाली है। इस ताल को शास्त्रीय और सुगम संगीत दोनों में प्रयोग किया जाता है। यह मध्य लय में तबले पर बंद बोलों में बजाया जाता है।

ठेका (मूल प्रतिरूप):

1 2 |3 4 5 | 6 7 | 8 9 10

धी ना | धी धी ना | ती ना | धी धी ना

X 2 0 3

ग़ज़ल गायकी में ताल का कार्य मुख्यतः कविता के भाव और शब्दों के अर्थ को उभारने के लिए होता है। यहाँ ताल शास्त्रीय संगीत की तरह भारी नहीं होती, बल्कि वह ग़ज़ल के मिज़ाज के अनुरूप कोमल और सुगम होती है, ताकि सुनने वाले पर शब्दों का प्रभाव अधिक हो सके।

सारांश

ग़ज़ल गायकी में तबला का प्रयोग न केवल लयबद्धता प्रदान करता है, बल्कि भावनात्मक गहराई और काव्यात्मकता को भी निखारता है। ऐतिहासिक रूप से, बेगम अख्तर और के.एल. सहगल जैसे कलाकारों ने हारमोनियम और सरंगी के साथ तबला का प्रयोग किया, जिससे ग़ज़ल एक शास्त्रीय सेमी-क्लासिकल शैली के रूप में लोकप्रिय हुई। आधुनिक दौर में, जगजीत सिंह और पंकज उधास जैसे गायकों ने इसे सहज और आकर्षक बनाए रखने के लिए सरल तालों, जैसे *केहरवा* और *दादरा*, का प्रयोग किया। तबला का उपयोग गायक और तालवादक के बीच सूक्ष्म संवाद स्थापित करता है, विशेष रूप से *लगी* जैसे छोटे ताल बदलावों के माध्यम से, जो ग़ज़ल की प्रस्तुति को प्रभावी बनाते हैं। मंचीय प्रस्तुतियों में ताल और स्वर के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि ग़ज़ल का मुख्य उद्देश्य भावनात्मक अभिव्यक्ति है, जिसे लय या वाद्य-यंत्र बाधित नहीं कर सकते। इस प्रकार, तबला ग़ज़ल गायकी में केवल एक लयकारक नहीं है, बल्कि संगीत और काव्य के बीच एक संयोजक पुल के रूप में कार्य करता है, जो पारंपरिक और आधुनिक दर्शकों दोनों को आकर्षित करता है।

संदर्भ सूची

Deshpande, S. (2019). Indian Musical Traditions and Their Evolution: A Study on Ghazal. New Delhi: Routledge.
Qureshi, R. (2008). Sufi Music of India and Pakistan: Sound, Context, and Meaning in Qawwali. Oxford University Press.
Sharma, M. (2019). The Influence of Classical Music on Modern Ghazal Performances. Journal of Indian Musicology, 14(2), 32-45.
Swar Sindhu. (2022). A Retrospective on Ghazal Singing and Instrumental Accompaniment. Swar Sindhu: National Peer-Reviewed Journal of Music, 10(1), 25-30.
Swarsudha Journal. (2021). Ghazal Gayaki: Evolution and Instrumentation. Swarsudha, 7(4), 50-56.
Bhatt, S. (2017). "Exploring Emotional Dynamics through Tabla in Ghazal Singing." Journal of Performing Arts Studies, 5(3), 20-38.
Kapoor, R. (2015). The Sound of Ghazals: An Analysis of Musical Instruments in South Asian Ghazal Performances. Mumbai: Sangeet Kala Press.
Khan, A. (2016). "Bridging Classical Music and Ghazal." Music Review Quarterly, 8(2), 44-58.
Patel, D. (2020). Light Classical Music Forms in India: Ghazal and Its Aesthetic Influence. New Delhi: Heritage Publishing.
Swaminathan, R. (2018). Cultural Heritage and Modern Adaptations in Indian Music. Chennai: Carnatic Studies Institute.
Russell, Ralph. (1992). The Pursuit of Urdu Literature: A Select History. Zed Books.
Ali, Agha Shahid. (2000). Ravishing DisUnities: Real Ghazals in English. Wesleyan University Press.
Shamsur Rahman Faruqi, "Sher-e-Shor Angez: A History of Urdu Poetry" (2005).
Ralph Russell, "The Oxford India Ghalib: Life, Letters, and Ghazals" (2003).
Frances W. Pritchett, "Nets of Awareness: Urdu Poetry and Its Critics" (1994).
Aijaz Ahmed, "Ghazal as a Genre in Urdu Poetry" (2000).
C.M. Naim, "Ghalib: Selected Poems and Letters" (1997)

.